9

कविता शिक्षण की पद्धति

संदीप यादव*

प्रस्तुत आलेख कविता शिक्षण की पद्धति से संबंधित है। कविता शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में भाषा कौशल एवं संवेदना का विकास किया जा सकता है। कविता में जीवन का हर रंग समाहित रहता है। कविता का शिक्षण जीवन के विकास के लिए है, यह सिर्फ़ आनंद एवं रसानुभूति का विषय नहीं है बल्कि विद्यार्थियों को जीवन में दक्ष बनाता है। कविता शिक्षण की कक्षा में विद्यार्थी कविता वाचन करते हैं। कविता पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इस प्रक्रिया से उनके अंदर आत्मविश्वास का विकास होता है। शिक्षक कविता द्वारा सामाजिक संरचना एवं परिवेश से विद्यार्थियों को परिचित कराते हैं, विद्यार्थी कविता की ध्वनियों को सुनते हैं और अपने आस-पास उपलब्ध चीज़ों से उनकी तुलना करते हैं। इस तरह से वे परिवेश और वातावरण से परिचित होते हैं। अतः शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में कविता शिक्षण के माध्यम से उनकी कल्पना का विकास करे, उन्हें कविता वाचन के लिए प्रेरित करे। शिक्षकों द्वारा उच्चारणगत अशुद्धियाँ भी दूर की जा सकती हैं। विद्यार्थियों में बचपन से जिन संस्कारों की नींव तैयार हो जाती हैं वे बहुत लंबे समय तक रहते हैं। अतः उन्हें कविता शिक्षण के माध्यम से सामाजिक एवं लोकतांत्रिक रूप से कुशल बनाया जा सकता है। प्रस्तुत आलेख में कविता शिक्षण कैसे किया जाए, इस पर प्रकाश डाला गया है।

© NCERT not to be republished

कविता जीवन के सूक्ष्म अनुभव का प्रतिफल होती है। यह कवि के अनुभूति की अभिव्यक्ति है। कविता में समाज का ताना-बाना गुँथा रहता है। अतः इसे जीवन से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। कविता जीवन के मर्म को उद्‌घाटित करती है। कविता का शिक्षण सिर्फ़ भाव या सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि विचारों की भी अभिव्यक्ति है। ये अलग बात है कि आधुनिक कविता में विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। कविता के शिक्षण के दौरान कविता के वैचारिक धरातल को उद्‌घाटित करना शिक्षक का ध्येय होना चाहिए। कविता शिक्षण में भाव सौंदर्य या विचार को समाज-सापेक्ष इंगित करना आवश्यक है क्योंकि शब्द से अर्थ की यात्रा में जीवन-दर्शन का प्रामाणिक उदाहरण मौजूद रहता है। शिखा चतुर्वेदी के शब्दों में, "कविता शिक्षण में भाव-सौंदर्य संबंधी शास्त्रीय प्रविधि की कठिनाइयों में न जाकर छात्रों को इनका सामान्य परिचय देना ही अपेक्षित होगा। इस परिचय के आधार पर बच्चे कविता के मर्मस्पर्शी

---

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर* (संविदा), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., भोपाल, मध्य प्रदेश

स्थलों की पहचान और अनुभूति में समर्थ हो सकेगा।" साहित्य शिक्षण को अनुभूतिमय बनाने के लिए उसके संरचनात्मक पक्ष को जानना आवश्यक है। कविता के आदर्श वाचन के साथ-साथ उसके लयात्मक पक्ष को बताना ज़रूरी हो जाता है। कविता में शब्दों के चयन का विशेष महत्त्व होता है। चयन करते समय कवि सार्थक शब्दों का चयन करता है। इस चयन में कविता की गहन अनुभूति होती है। अतः शब्द चयन के संदर्भ को परिवेश एवं वातावरण से जोड़कर पढ़ाया जाना आवश्यक है।

कविता से भाषा-शिक्षण एवं वाचन से विद्यार्थियों में स्तरानुकूल परिवर्तन देखने को मिलता है। साहित्य का ढाँचा अति विशिष्ट प्रकार का होता है जिसका अभिव्यक्ति के किसी अन्य क्षेत्र में मिल पाना असंभव है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि साहित्य उन लोगों द्वारा रचा जाता है जो अपने समय की भाषा के प्रति संवेदनशील होते हैं। इस भाषा के माध्यम से ही वे अपने बाह्य संसार को अपनी दृष्टि से उद्घाटित कर उसे स्थायित्व प्रदान करते हैं। वस्तुतः साहित्य कवि की विशिष्ट अभिव्यक्ति होती है। यह भाषा सामान्य से विशिष्ट होती है। अतः इसके शिक्षण में सृजनात्मक पक्ष पर ध्यान रखना चाहिए। कविता में लक्षणा-व्यंजना के अतिरिक्त आधुनिक कविता में बिंब, प्रतीक एवं मिथक का उन्नयन प्रयोग दिखाई देता है। अतः यह ज़रूरी है कि बिंबात्मक, प्रतीकात्मक एवं मिथकीय चेतना की समझ का उपयोग शिक्षण के दौरान किया जाए।

कविता का मूल भाव शब्द में रहता है। उन शब्दों में कवि की गहन अनुभूति के क्षण कैद हो जाते हैं, जो सदा-सदा के लिए चिरस्मरणीय रहते हैं। कविता शिक्षण में शब्दों के भाव पक्ष के साथ-साथ ध्वन्यात्मक शब्दों को विशेष महत्व देना चाहिए क्योंकि ध्वन्यात्मक शब्द कविता के संदर्भ एवं परिवेश से जुड़ा रहता है। सौंदर्यानुभूति के सोपान में शिक्षक को सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि शब्दार्थ केवल भावों को स्पष्ट करने का साधन मात्र है, साध्य नहीं। शिक्षक के शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में निहित भाव-विचार एवं साहित्यिक सौंदर्य का ज्ञान प्रदान करना होता है। कविता की सौंदर्यानुभूति का ध्यान रखते हुए उसके मर्म तक पहुँचा जा सकता है। कविता सिर्फ सौंदर्यानुभूति नहीं है उसमें तो जीवन-मर्म निहित होता है। उस जीवन मर्म रूपी संसार तक पहुँचने के लिए एक लंबी यात्रा करनी पड़ती है। कविता का शिक्षण करते समय ध्वनि चिह्नों आदि पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। आरोह-अवरोह के साथ कविता का वाचन करना चाहिए। कविता शिक्षण में विद्यार्थियों की रुचि, योग्यता एवं उम्र का ध्यान देना चाहिए। साहित्य में किसी व्यक्ति द्वारा किसी अन्य के प्रति व्यक्त की गई संवेदना का महत्त्व होता है। लेकिन क्या शिक्षा का महत्व केवल साहित्य में चित्रित विश्व में निर्वाह करना सिखाना होना चाहिए या फिर परंपरा में व्याप्त दमनकारी प्रवृत्तियों पर प्रश्न करने और उन्हें बदलने का भी होना चाहिए। साहित्य संवेदनात्मक अनुभूति है। शिक्षण में संवेदना एवं जीवन मूल्य को समाहित किया जाना चाहिए। कविता शिक्षण द्वारा कविता का समाज सापेक्ष मूल्यांकन करना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

© NCERT not to be republished

कविता शिक्षण की पद्धति को समझने के लिए एक प्रतिमान का प्रयोग किया गया है। यह प्रतिमान कक्षा अंतःक्रिया पर आधारित है। इसमें कविता शिक्षण के कुछ मूलभूत बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। शैक्षिक संप्राप्ति एवं अधिगम को ध्यान में रखकर इस पर विचार और प्रतिक्रिया की गई है।

कविता के लाभ

शिक्षक के लिए

खिलौनेवाला (सुभद्रा कुमारी चौहान, *रिमझिम 5*) कविता बच्चे के मन का मर्मस्पर्शी चित्रण है। बच्चों के मन में अनेक तरह के भावात्मक एवं संवेदनात्मक बिंब बनते रहते हैं। कविता एक सजीव बिंब लिए हुए है। कविता लय एवं तुक पर आधारित है। कविता में लय की सार्थक अभिव्यक्ति के लिए कवयित्री ने शब्दों का दुहराव किया है। अतः कविता में नाटकीयता एवं सपाटबयानी का प्रयोग है। कविता के माध्यम से बच्चों के मनोविज्ञान को समझ सकते हैं। बच्चों की रुचि के अनुसार खेल-खेल में शब्द चयन के माध्यम से क्रय-विक्रय आदि से परिचय करा सकते हैं। कविता में मिथक का प्रयोग भी किया गया है। अतः मिथक और इतिहास को समझकर उसका सरलीकरण करके छात्रों को समझा सकते हैं। मिथक किसी भी समाज एवं संस्कृति के जातीय चिह्न हैं। अतः मिथकों के अध्ययन-अध्यापन से शिक्षक छात्रों में अपनी ज्ञान परंपरा के बोध को उत्पन्न कर सकता है। कविता से पढ़ने, लिखने एवं बोलने का अभ्यास कराया जा सकता है। इसके साथ ही कविता शिक्षण द्वारा भाषा संबंधी ज्ञान के कौशलों का विकास किया जा सकता है।

श्रवण कौशल का विकास

शिक्षक द्वारा कविता का सस्वर वाचन किया जाना चाहिए। बच्चे कविता को सुनेंगे। इससे वे यति-गति, आरोह-अवरोह आदि से परिचित हो सकेंगे। कविता में अंग्रेज़ी शब्द भी आए हैं, अतः इससे बहुभाषिकता का विकास संभव है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा भी बच्चों के बहुभाषिकता के विकास पर बल देती है। गली-मोहल्ले, कॉलोनी में फेरी लगाने वाले किस अंदाज में आवाज़ लगाते हैं, यह भी एक कौशल है। इन गली/मोहल्लों में फेरी लगाने वालों की आवाज़ की भिन्नता में भी आकर्षण का एक मनोवैज्ञानिक कारण होता है, जिससे बच्चे आकर्षित होते हैं। अतः इन ध्वनि भिन्नताओं का सफल शिक्षण न केवल पाठ्यक्रम में बल्कि खेल-कूद में इनके प्रयोग को प्रेरित कर सकता है। ऐसे प्रयोगों के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है। बच्चे पैसे, रुपये जैसे शब्दों के माध्यम से प्रचलित/अप्रचलित मुद्राओं से परिचित होंगे। साड़ी, गाड़ी, रेल-खेल आदि ध्वनि साम्य वाले शब्द से परिचित हो सकेंगे।

कविता के प्रत्येक अंश का वाचन कराने के उपरांत अधिगम संप्राप्ति को सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रियागत प्रश्नों का अभ्यास कराया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, आपको किस प्रकार के खिलौने पसंद हैं। गली मोहल्ले में फेरी लगाने वाला किस प्रकार आवाज़ लगाता है? क्या आप किसी फेरी वाले की आवाज़ लगा सकते हो? कविता में तोते का रंग हरा है। कोयल, कबूतर, मोर, कौआ, बत्तख, गौरैया आदि के रंग पर बात की जा सकती है। कविता में कुछ

© NCERT not to be republished

बर्तनों का ज़िक्र है। आपके घर में और कौन-कौन से बर्तन प्रयोग किए जाते हैं?

उपरोक्त कक्षीय प्रक्रियाओं से विद्यार्थियों में मौखिक एवं श्रवण कौशल का विकास होगा। यह विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए ज़रूरी प्रक्रियाएँ हैं। इससे विद्यार्थियों में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हो सकता है। यदि कोई विद्यार्थी कठिनाई का अनुभव कर रहा हो तो उसे कविता के प्रमुख अंश का वाचन कराएँ। तत्पश्चात् उसके पसंद के विषय पर चर्चा करें। उसके प्रिय खेल के बारे में वार्तालाप करें।

कविता में लय है। कविता में कुछ प्रमुख शब्दों का दुहराव भी किया गया है। अतः शिक्षक कविता में उत्पन्न लय पर चर्चा करें। शब्दों के दुहराव का क्या महत्त्व होता है, ऐसे शब्दों की सूची बच्चों से बनवाएँ जिनका कविता में दुहराव हुआ है। आस-पास रहने वाले प्रमुख पक्षियों पर चर्चा कराई जा सकती है। अतः विद्यार्थी अपने आस-पास रहने वाले पक्षियों पर अपनी स्वतंत्र राय दे सकते हैं। प्रश्न पूछ सकते हैं। आस-पास की घटनाओं को जोड़ सकते हैं।

लिखित अभिव्यक्ति

पिंजरे में कौन-कौन से पक्षी पाले जाते हैं? क्या पक्षियों को पिंजरे में पालना उचित है? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

- सरला मचल-मचलकर साड़ी लेने को कहती है। आप अपनी माँ से कौन-सी चीज़ मचल-मचल कर माँगते हैं?
- कविता में आए अंग्रेज़ी शब्दों को लिखिए।

विद्यार्थियों के समक्ष और अधिक प्रश्न रख सकते हैं। अन्य गतिविधियाँ भी कराई जा सकती हैं। बच्चों को छोटे-छोटे समूह में बाँट सकते हैं, तत्पश्चाात् कुछ विद्यार्थियों को प्रश्न और कुछ को उत्तर देने को कह सकते हैं। प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने का अवसर सभी विद्यार्थियों को मिलना चाहिए। इस प्रकार से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ेगा और कविता का पूर्णतः मूल्यांकन भी हो सकेगा।

मौखिक अभिव्यक्ति

कविता शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास किया जा सकता है। विद्यार्थी कविता का जब कक्षा में वाचन करते हैं तो शिक्षक उनकी उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को दूर कर सकते हैं। कविता शिक्षण करने के उपरांत प्रश्न-अभ्यास पर बल दिया जाना चाहिए जिससे बच्चे कविता के मूल भाव को समझकर व्यक्त कर सकें। इससे विद्यार्थियों का संप्रेषण कौशल उत्तम होगा। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को दो समूहों में बाँट लें, एक समूह को प्रश्न और दूसरे को उत्तर देने को कहें। यह ध्यान रहे कि प्रश्न और उत्तर देने का अवसर सभी विद्यार्थियों को मिले। विद्यार्थी मौखिक रूप से अपने विचारों को व्यक्त करेंगे। अतः कविता के भाव और संवेदना को भली-भाँति समझ लेंगे और नयी कविता पढ़ने-समझने की प्रेरणा भी मिलेगी।

शिक्षकों हेतु सुझाव

कविता शिक्षण के लिए आवश्यक है कि कविता का सस्वर वाचन किया जाए। कक्षा में विद्याथियों की संख्या अधिक हो तो उन्हें एक गोलाकार आकार में बैठाएँ, तत्पश्चात् कविता वाचन एवं अभिनय भी करवाएँ। प्राथमिक या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी इस

तरह से सीखने एवं अध्ययन में विशेष रुचि लेते हैं। विद्यार्थी नीरस अनुभव नहीं करेंगे और अतः उनके मन में पढ़ने-लिखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा। जो विद्यार्थी कठिनाई का अनुभव कर रहे होंगे, उनके प्रति विशेष ध्यान दिया जाए क्योंकि कुछ बच्चे बोलने या पढ़ने में संकोच करते हैं। बच्चों को पढ़ने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण से प्रेरित करें। उनकी गलतियों को अगर छोटी कक्षाओं में सुधार दिया जाए तो यह उनके जीवनभर काम आएगी। कविता को सिर्फ़ भाव या सौंदर्य तक ही सीमित न रखा जाए। कविता को बाहर निकालकर जीवन के अन्य आयामों से जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि जो मूल्य कविता में है वह जीवन का ही एक मूल्य है। छोटी कक्षाओं में अकसर यह देखा जाता है कि विद्यार्थी कविता तो याद कर लेते हैं परंतु उसके संदर्भ और परिवेश से अनभिज्ञ रहते हैं। अतः उनकी चेतना को विकसित करने के लिए यह ज़रूरी है कि वे घटनाओं को अपने परिवेश एवं समाज से जोड़कर अनुभव करें।

शिक्षक विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की पहेलियों, कहानियों आदि के माध्यम से अभ्यास करा सकते हैं। कविता में आए विभिन्न शब्दों के विलोम शब्द लिखने को दिए जा सकते हैं। कविता के आधार पर शब्दों का मिलान कराया जा सकता है।

विद्यार्थियों को प्रेमचंद, रवींद्रनाथ टैगोर, मुल्कराज आनंद, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ 'रेणु' आदि की कहानियाँ उपलब्ध कराकर पढ़ने और समझने का अवसर प्रदान करें। तत्पश्चात् उनके अनुभव पर चर्चा करें। इन क्रियाकलापों के साथ-साथ अधिगमपरक मूल्यांकन होता रहना चाहिए ताकि अधिगम प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती रहे।

निस्संदेह कविता जीवन के लिए होती है। शिक्षण में इसके प्रयोग से लोकतांत्रिक एवं सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की जा सकती है क्योंकि साहित्य का विकास जीवन का विकास होता है। इसलिए समय सापेक्ष कविता या साहित्य का मूल्य बदलता रहता है। बदलते समय में नए भाव-बोध को परिवेश एवं वातावरण से जोड़कर देखा जाना चाहिए क्योंकि जब तक परिवेश एवं समाज पर नज़र नहीं टिकाएँगे, तब तक कविता के मूल्य को समसामयिक संदर्भ से नहीं जोड़ सकते हैं। एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों को समय-समाज के परिप्रेक्ष्य से परिचित कराए। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कक्षा 9 की *क्षितिज* में संकलित राजेश जोशी की एक कविता 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' को देख सकते हैं। यह कविता बाल श्रम पर आधारित है। अतः इस कविता को हम संवैधानिक दृष्टिकोण से देख सकते हैं। भारतीय संविधान बाल श्रम को अपराध मानता है। भारतीय संविधान में अनुच्छेद 24 कारखानों या खानों में या किसी अन्य खतरनाक कामों में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के नियोजन का विशिष्ट रूप से निषेध करता है। यह निषेध मानव अधिकारों संबंधी अवधारणाओं तथा संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांतों के अनुरूप है। भारत में बच्चों के अधिकारों पर कार्य करने के लिए कैलाश सत्यार्थी को 2015 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अतः इस कविता के माध्यम से बाल श्रम, लोकतांत्रिक मूल्य आदि से परिचय कराया जा सकता है। अतः कविता का शिक्षण सिर्फ़ आनंददायी प्रक्रिया नहीं है बल्कि इसे

© NCERT not to be republished

सामाजिक, राजनीतिक परिवेश के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली कविताएँ विद्यार्थियों के मानस पटल पर गहरा प्रभाव डालती हैं क्योंकि विद्यार्थियों का कोमल मन, सही-गलत का निर्णय लेने में असमर्थ होता है। अतः शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों को तर्कशील बनाएँ एवं किसी भी पक्ष पर अपनी प्रतिक्रिया करने से बचाएँ। धीरे-धीरे ही सही एक दिन वे उस मुकाम पर पहुँच जाएँगे जब वह निर्णय लेने में सक्षम हो सकेंगे, इसलिए उनके मानस पटल को खुलने दें। उनके विचारों को कल्पना की ऊँची उड़ान भरने दें। कविता शिक्षण में वह शक्ति है जो उनके वैचारिक आयाम को नयी ऊर्जा देगी।

निष्कर्ष

कविता में जीवन के सभी पहलुओं का समाहार होता है। अतः कविता से जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा। कविता शिक्षण से विद्यार्थियों में भाषा कौशल का विकास संभव है। विद्यार्थी कविता के माध्यम से जीवन के अन्य पहलुओं से भी परिचित हो सकेंगे। कविता के वाचन और अभिनय से उनका उत्साहवर्धन होगा। कविता जीवन के प्रति संवेदना का विकास करती है। अतः विद्यार्थी कविता द्वारा समाज, संस्कृति एवं परिवेश के प्रति जागरूक होंगे। कविता शिक्षण द्वारा भाषा संबंधी अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है। कविता में ध्वनियों का भी विशेष महत्त्व होता है। विद्यार्थी ध्वनियों को सुनेंगे, अपने आस-पास से उनकी तुलना करेंगे और उसके अर्थ को जान सकेंगे। शब्द से लय एवं तुकबंदियों का यह ज्ञान होगा। वे नए शब्दों से परिचित होंगे, शब्द से अर्थ की यात्रा कर सकेंगे। कविता समाज निर्माण में सहायक है। अतः विद्यार्थी समाज के अन्य पहलुओं से परिचित होंगे।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

कश्यप, सुभाष. 2000. *हमारा संविधान* (चौथी आवृत्ति). पृ. 104. नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत.

चतुर्वेदी, शिखा. 2008. *हिंदी शिक्षण*. पृ. 207. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

जोशी, सुषमा. *हिंदी भाषा शिक्षण*. पृ. 174. आलोक प्रकाशन, लखनऊ.

नीपा. 2016. *परिप्रेक्ष्य,* अंक 3. पृ. 69. नीपा, नयी दिल्ली.

सिंह, दिलीप. 2010. *अन्य भाषा शिक्षण के बृहत् संदर्भ*. पृ. 113–114. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.